

आणंद्वर्धन-क्रचित नवतत्त्व-चउपर्झ

- साध्वी दीमिप्रज्ञाश्री

पत्र-७, शेठ डोसाभाई अभेचंद जैनसंघ भावनगरना संग्रहनी हस्तप्रतिनी झेरोक्स उपरथी आ सम्पादन कर्यु छे.

तेना कर्ता खरतरगच्छना श्री धनवर्द्धनसूरिना शिष्य श्री आणंद्वर्द्धनसूरि छे. (गाथा २८४-२८५) रचना संवत १६०७ छे, लेखन संवत-१६०८ महा सुद-१-मंगळवार छे. लेखक-देवगुप्तसूरि छे.

आ नवतत्त्व चउपर्झनी रचना पछी १ वर्षमां ज आ प्रति लखायेली छे. आ चउपर्झनी कुल गाथा-२८९ छे.

जेमां गाथा १ थी ५८मां जीवतत्त्व | ५९ थी ९९मां अजीवतत्त्व | १००थी १२३मां पुण्यतत्त्व | १२४ थी १६१मां पापतत्त्व | १६२ थी १८४मां आश्रवतत्त्व | १८५ थी २१७मां संवरतत्त्व | २१८ थी २३०मां निर्जातत्त्व | २३१ थी २४५मां बंधतत्त्व | २४६ थी २८०मां मोक्षतत्त्वनुं निरूपण छे। गाथा २८१ थी २८३मां नवतत्त्वने जाणवाथी थतो लाभ वगेरे दर्शाव्या छे। अन्ते गुरुपरम्परा अने लाभ बतावेल छे।

श्री अरि[हं]तनां पह(द)युगल | प्रणमीय परमाणंदि |

नवइतत्त्व विवरण कहुं | जे भाख्यां वीरजिणंदि ॥१॥

नवनिधां चक्रवर्त्तनां | जिम धन पार न होइ |

तिम नवतत्त्व विचारनु | कहीय न पामइ कोइ ॥२॥

नव नंदे नव दुंगरी | कनकतणी जलनिधि |

तिम नवतत्त्व विचारणा | राखुं हीयडा मधि ॥३॥

ग्रीवां नव ग्रीवेकि छइं | लोकनालि ब्रह्मंडि |

मुखमंडण कंठि धरि | तत्त्व नवइ निज पिंडि ॥४॥

नव वाडि रख्या करि | ब्रह्मचारि नीय ब्रह्म |

तिम नवतत्त्वे राखज्यो | विनय मूल जिनधर्म ॥५॥

हिव - चउपई ॥

जे सिद्धांति कहिउ विचार । सांभलतां लहीइ भवपार ।
 भवियण अर्थ सयल संग्रहइ । अभव्य जीव ते नवि सद्हहइ ॥६॥
 जीव अजीव अनइ पुण्य पाप । आश्रव संवर करिवुं आप ।
 निझ्झर बंध मोक्ष ए नवइ । निसुणउ भेद कहुं जे हवइ ॥७॥
 पहिलुं चऊद भेद जीवना । सूखिम नइ बादर बेवना ।
 पढवी अप्प तेड नइ वाय । वणसय ए सूखिम कहिवराय ॥८॥
 चऊदराज व्याप्यु इणि सही । दृष्टिगोचरि ते आविं नही ।
 जिम जल मछ्यादिक गति गमण । तिम आकाशि खेचर परिभ्रमण ॥९॥
 जिम तृणादि जल ऊपरि तरइ । तिम ज्योतिष पवने संचरइ ।
 धन तन पवन थविर सुरलोक । तेम पृथिवीइं मानव लोक ॥१०॥
 ए पांचइ थावर ते सही । विण चलाव्या चालइं नही ।
 माटी पाणी तेज पवन्न । बद्ध र्पिंड दीसइ वलि वन्न ॥११॥
 पंचइ ए बादर इम लहियां । सूखिम बादर इणि परि कहियां ।
 आंखि कानं मुख नाक जि नही । एकेंदी काया ते सही ॥१२॥
 माटी पीली ऊस धाहडी । आभूआं अरणेटु खडी ।
 मणसिल हीगलो हरीआल । भोमल मीठा खाणि रसाल ॥१३॥
 घाती धातु पषाणक सीस । पूढ़विकाय ए विश्वावीस ।
 पाणी धुंझरि करहा हीम । ठार ओसादिक कणीआ सीम ॥१४॥
 अप्यकाय हिव तेउकाय । वीज झरल धूंउ कहिवराय ।
 दीवु मुरमरा उलकापात । अगनि तणी छ्हइं बहुली जाति ॥१५॥
 अति कपरिमा जे छ्हइं वाय । योर्नि सात सात लक्ष थाय ।
 वणसय काय तणा बि भेद । भंग समु जे पाली छेत ॥१६॥
 खंडोखंड करी वावीइ । ऊगइ ते अनंत साचीय ।
 ऊगइ कंद न ऊगइ मूल । सूक्ष्म विचार नही ते थूल ॥१७॥
 बाउल पीपल बडला आदि । ऊगइं डाल प्रत्येक बनी आदि ।
 अनंत जीवनु बाधउ पिंड । चऊद लाख ते योनि अखंड ॥१८॥

बीज फूल फल पान जेतलां । छालि काठ मूल तेतलां ।
 ते वनराइ कहीइ प्रत्येक । वेद नपुंसक पंचइ एक ॥१९॥
 अष्ट जोयण वडनु विस्तार । वेला सहस जोयण निस्तार ।
 आहार सयर इंद्रय ऊसास । पर्याप्ति पूरी च्याइ जास ॥२०॥
 योनि लाख दस एहनी जाणि । एकेंद्रीना च्यारि प्राण ।
 सासोसास काय बल आयु । स्पर्शनेंद्रय हिव कहुं परमायु ॥२१॥
 अठ पअंतर महूरत सवि सही । वर्ष सहस बावीसइ मही ।
 सात सहस वच्छर अपकाय । त्रिणि दिवस हुताशन आय ॥२२॥
 वच्छर त्रिणि सहस जे वाय । वर्ष सहस दश वणसइकाय ।
 ए पंचइ हुंडक संस्थान । बावन लाख एकेंद्री मान ॥२३॥
 छाण योनि बाबति जूजूआ । जीब बहूपरि कुल इम हुआ ।
 बार कोडि लख कुल पुढवीना । सात कोडि लख हुइ आपना ॥२४॥
 त्रिणि तेऊ वाऊना सात । वणसय अट्टावीस कुल जात ।
 लेश्या कृष्ण नील कापोत । सयर ऊदारिक कार्मण ज्योति ॥२५॥
 वाउकाय वैक्रय विशेष । इम एकेंद्रय कहिया निःशेष ।
 हिव कहुं बिति चउरेंदी गुहिर । जेहं सरि हाड मंस नही रुहिर ॥२६॥
 बेंद्रीनइ काया मुक्ख । अलस जलो सीपूना शंख ।
 कूमि पुंरा ईअल गंडोल । कहितां पार नही इंडोल ॥२७॥
 तेंद्री बोलु बहू छता । काया मुख नाशा अधिकता ।
 कीडी मंकोडी जूअ लीख । मांकड चांचड मानव सीख ॥२८॥
 कीडा ऊदेही घीमेलि । गीगोडा कातरा चूडेलि ।
 गादहींआ खज्जूरा जूआ । केता कहु नार्मि जूजूआ ॥२९॥
 हिव चउरिंदी बोलूं वयण । काया मुखनइ नाशा नयण ।
 वीछी ढंकण भमरा टीड । डांस मसा पंखाला कीड ॥३०॥
 कोकीआ मच्छर पत्तंग । देखी ज्योति जेहं लागइ रंग ।
 फाकां फूदी कूटी भाति । माखी भमरीनी बहू जाति ॥३१॥
 विगलेंदीय ए आगम भाख । प्रत्येकि छइ बि बि लाख ।
 बि ति चउरेंदीनां कुल कोडि । सात आठ नव लाखह जोडि ॥३२॥

बेंद्रीनइ छ एह प्राण । जीभ वचन बल अधिकां जणि ।
 त्रेंद्रीनइ घ्राण विशेष । चउर्द्रीनइ नेत्र नमेष ॥३३॥
 असंनीआ पंचेद्रय कांन । नवइ प्राण पणि न हुइ सांन ।
 बि-ति-चउ-पंच समूच्छम जेह । भाषा पर्यासि ऊपनी तेह ॥३४॥
 विगलेंदीय नइ असंनीआ । तिरिय पंचिदी इम वन्नीआ ।
 औदारिक तेजस बेत जाणि । कार्मण त्रीजुं सयर वखाणि ॥३५॥
 एहतणुं नपुंसकवेद । हुइ आकार करइं बहु खेद ।
 पढवी आप अनइ वनस्पती । बि-ति-चउर्दी बेहू गती ॥३६॥
 मानव अनइ तिर्यच मझारि । अगनि वाउ पुण तिरिय विचारि ।
 नाना परि हुंडक संस्थान । देहतणुं हिव बोलुं मान ॥३७॥
 बेंद्री बार जोयण शंखादि । त्रिण जोयण त्रेंद्रीय आदि ।
 ऊदेही आगमि एवडी । चउर्दी काया जोयणि च(व?)डी ॥३८॥
 असंनीआ सनीआ तिर्यच । जेहं तणइ हुइं इंद्रय पंच ।
 सहस जोयण मध्यादिक कहिआ । बि-ति-चउर्दी असंनीआ ॥३९॥
 एहनइं छेवट्टी संघेण । च्यारइ गति पामइ तिरिएण ।
 नर तिरि नारक नइ देवता । लाभइ अरथ सुगुरु सेवता ॥४०॥
 माखिक मदिरा मांखण मंस । रुक्षी सेवां मानव अवतंस ।
 मरइ ऊपजइ बि घडीमाहि । समूच्छम इम भव पूराय ॥४१॥
 हिव गर्भज पंचेद्रय सुणउ । एह विचार अछइ अतिघणउ ।
 मानव तिरिय देव नारकी । पहिलुं चरच कही पारकी ॥४२॥
 सुर-नर नारकनइ दश प्राण । पंचेंद्री मन वय काय जाणि ।
 सासोसास अनइ परमायु । छइ पर्यासि अनेरी थाय ॥४३॥
 आहार सयर इंद्रय ऊपास । भाषा मन महूरति लिय वास ।
 सुर नारक वचन समकालि । मानव षट महूरत अंतरालि ॥४४॥
 औदारिक वैक्रय आहार । तेजस कार्मण पंच प्रकार ।
 मांनव ए सुर नारक त्रिणि । औदारिक तेजस कार्मणि ॥४५॥
 पुरष नारि नपुंसकवेद । नर तिरि संनीआ नही भेद ।
 सयर नारकी धणसय पंच । तेत्रीस सागर आयु अखंच ॥४६॥

हाड रुहिर आमिरुं त्वचा- । रहित देह सुर मुनि ॑कर वचा ।
 दश सहस्राहिं नही आयु । सुर नारक बे सम वरसायु ॥४७॥
 पंचानुतरनइ ग्रीवेकि । वैक्रय सयरनु हि ते छेकि ।
 लाख जोयण वैक्रय परमाण । अवर देवनुं ए करमाण ॥४८॥
 मानव कोस त्रिहुनु देह । पुणा करमाहिं नही छेह ।
 त्रिण्ण पल्योपमनुं परमायु । पूरवकोडि तिरि असंन्नी आयु ॥४९॥
 सत्तिरि कोडि लाख वच्छरिं । छप्पन कोडि सहस ऊपरिं ।
 एर्ति एक पूरव निरमाण । इस्यां कोडि आउं परिमाण ॥५०॥
 मानव सम संनीआ तिरियंच । जघन्य अंतरमहूरत अखंच ।
 आरइ आयु देह निरमाण । भरहेरव जूजूआं बंधाण ॥५१॥
 युगलीआं सुरगति इक होइ । देव-नारकी बि गति जोइ ।
 नर-तिर्यच थाइं एह चवी । मानव पंचइ गति केलवी ॥५२॥
 दस संज्ञा सवि हुं जीवमाहि । नर छ लेश्या धरइ उच्छाहि ।
 सुर तिरि नारक चउ चउ लाख । मानव चउद लाख योनि भाख ॥५३॥
 लाख चउरासी सविहुं तणी । जीव योनि सरवालइ भणी ।
 नर-तिरि-गर्भज काय बंधाण । छ संधेण च्छइं नर संस्ठाण ॥५४॥
 जलचर बार लक्ख कुल कोडि । ऊपरि कोडि पंचासह जोडि ।
 खेचर लाख कोडि कुल बार । दसइ कोडि लख कुल थलचार ॥५५॥
 कोडि लाख नव भुजपरिसर्प । दाह कोडि लख उरपरिसर्प ।
 बार कोडि लक्ष कुल मानवी । नारक पणवीसइ मानवी ॥५६॥
 देव छब्बीस लक्ष कुल कोडि । सर्व थई सरवालु जोडि ।
 पंच सात नव एक अपार । आगलि मीडा दिउ अग्यार ॥५७॥

१९७५०००००००००००.

वस्तु - १

सूक्ष्म बादर सूक्ष्म बादर भेद एकेद्रं ।
 विगलेदीय त्रिणइ कहिया । गर्भजात तिरि मणुअ देवा ।
 संमूर्च्छम पंचेदीआ पज्जत्ता अपज्जत्त लेवा ।

भेद चउद सुणतां सही । दुरी पणासि दूरि ।
खरतरगच्छनायक भणइं श्री आणंदवर्धनसूरि ॥५८॥

हिव चउपई ।

भविआं निसुणउ बीजुं तत्त्व । अजीव ते जिहानु हहि सत्त्व ।
धर्माधर्मआका[शा]स्थिकाय । त्रिण्णइ त्रिहु भेदे नव थाय ॥५९॥
खंधु देश प्रदेसि करी । अद्वाकालदसु उद्धरी ।
चउद राज व्यापिड इणि भरी । केवलि जाणि एहनां चरी ॥६०॥
पुदगल थूल अच्छइं चिहुं भेदि । छदमस्थ जाणी कर्हि विछदि ।
खण्ड(न्ध) देश प्रदेश परमाण । अजीव चउद भेद निरमाण ॥६१॥
खंधु चउद राजनुं नाम । धर्मास्थिकाय पूरित अभिराम ।
राज खंड जोयण ते देश । तेहनु अणु सूखिम प्रदेश ॥६२॥
अधर्मकाय त्रिहु ए इम गणउ । आकाशास्थि इच्छां तिम मणउ ।
त्रिण्ण त्री नव भेदे जाणि । अद्वाकाल समय वक्षाणि ॥६३॥
अतीत अनागत नइ वर्तमान । एकठा न मर्लि ए अनुमान ।
तेहना भेद खंधादिकनुं हइ । इणि कारणि ते दशमु कर्हि ॥६४॥
घट पट थंभ ढुंगर नइ वृक्ष । आखा खंध कर्हिजे दक्ष ।
तेहना खंड देश ए सही । सूक्ष्म प्रदेश जे भेदइ नही ॥६५॥
खंधा देश प्रदेशा वस्तु । दृष्टिगोचरि दर्खि छदमस्थ ।
पुदगल सूक्ष्म अर्तिथ अत्यंत । दर्खि तुजउ मर्लि अनंत ॥६६॥
धर्म अधर्म आकाश ते किस्यु । तेह सरूप केवलि कहइ जिस्यु ।
सावधान हुई सुणिज्यो सहू । एह विचार अच्छइ पणि बहू ॥६७॥
धर्माधर्म पुदगल नभ काल । ए पंचइ निरजीव विशाल ।
पुदगल टाली च्यारइ वस्तु । दृष्टिगोचरि नाविं छदमस्थ ॥६८॥
तउ किम जाणि छइ अहिनाण । जीव पुदगल निं गमण प्रमाण ।
धर्मास्थि छइ तिहां जाई सकि । अधर्मास्थि आविड तिहां लुकिं ॥६९॥
जिम पाणी माहि माछलु । जां पाणी तां चालइ भलु ।
जीव अनइ पुदगल तिहां जाइ । चउद राज धर्मास्थिकाय ॥७०॥

धर्मधर्म अलोकि नथी । पुदगल जीव गमण नवि कथी ।
 जिम खोडा नर काठी थोभ । तावडि जातां च्छाया क्ष्योभ ॥७१॥
 पर्वत थांभा भीति पखाणि । पाणी खीला मूल अहिनाणि ।
 थूल पदारथ कर्रि प्रवेश । तउ सघले आकाश प्रदेश ॥७२॥
 अलोकमाहि अनंतानंत । च्छइ आकाश न जीव भमंत ।
 परमाणू खंधादिक च्यारि । वर्ण गंध रस फरिस विचारि ॥७३॥
 विविध वर्ण धर्रि बापडा । कृष्ण नील सित पीत रातडा ।
 गंध सुगंध दुर्गंधा होइ । खारा खाटा मधुरा सोइ ॥७४॥
 कडूआ तीखिण कसायला । सरस विरस लार्गि केतला ।
 फरिस कठिन कोमल छइं जेह । वर्ण स्वाद पालटीइं तेह ॥७५॥
 एक पुदगल पोला वाटुला । एक त्रिखूण चउखूणा भला ।
 एक निघट भारी लघु सही । एक चीता एक लांबा कही ॥७६॥
 इम पुदगलना भेद अनंत । केवलन्यानी जाणइ अंत ।
 काल भेद कहुं हिव सुणउ । समय मान्न सूखिम घणउ ॥७७॥
 कमल पान ऊपरि ऊपरी । सबल पुरुष तनुइं करी ।
 वींधइ पान सवे समकाल । पान विर्चि वहइं एतु काल ॥७८॥
 असंख्यात समय तिहां कहिय । भविक जीव तीणे सद्हिया ।
 वली वस्त्र जूनुं फाडीइ । त्रार्गि त्रागि सोइ जि मांडीइ ॥७९॥
 असंख्यात समयेकावली । बिसि छपन्न संख्यान ही अली ।
 सूक्ष्मनिगोद जीव एह आयु । सासोसासि सतर भव जाय ॥८०॥
 एक कोडिनइ सतसढि लाख । सहस सत्युत्तिरि बि शत भाख ।
 सोलोत्तर एतली आवली । हुइं बि घडी महूरत ते वली ॥८१॥
 अवर मान्न कहिं सूरीश । पांसठि सहस साढा छत्रीस ।
 एतले निगोद क्षुल्लक भवे । बीजु महूरत इणिपरे मवे ॥८२॥
 त्रीजुं त्रिणि सहस सातर्मि । ऊपरि त्रिहुतरि सासोससिं ।
 ते महूरत त्रीसे अहोराति । तिणि पनरे पखवाडि जाति ॥८३॥
 बिहु पाखे मास ते बारि । वच्छर हुइ ते असंख विचारि ।
 एक पल्ल्योपमि जाइ वही । एह विवक्षा आगामि कही ॥८४॥

छेद्यु भेद्यु जे जाइ नही । ते अणु आठे त्रसरज कही ।
 तिणि आठे रथरेणु विचारी । रेणु आठ वालाग्रउ धारि ॥८५॥
 वालुकागिं आठे एक लीख । आठ लीखि एक जूका सीख ।
 जूका आठे एक जव कहिउ । जव आठे उच्छेधांगुल लहयु ॥८६॥
 तिणि षट अंगुलि पाऊ प्रमाण । बिहु पाऊए बि हत्थि निर्माण ।
 बि हत्थि जोड एक हाथ समान । बिहुं हाथे धणुहानुं मान ॥८७॥
 बि सह धनुषे गाऊ एक । चिहुं गाऊ ए जोयण छेक ।
 कूठ एक ऊंदु एतलइ । पहुलउ लांबउ सम तेतलइ ॥८८॥
 रोम खंड एहवां लई भरे । सिद्धांति कहिउं ते करे ।
 युगल जण्यां सातइ दिन बाल । उच्छेधांगुल लिई सर वाल ॥८९॥
 आठ आठ साते पावडी । खंड कीधां ते संख्या चडी ।
 वीस लाख सत्ताणुं सहस । बावन ऊपरि अधिकां कहिंसु ॥९०॥
 केवलन्यानी आगलि गयां । रोम खंड संख्यातां थयां ।
 पुनरपि न होइ ए स्वल्पना । असंख्यात करि मन कल्पना ॥९१॥
 तीणे ते इम कूठ भरू । निश्चल ठांसी गाढउ करु ।
 जलि भेदइ नवि आगिं बलइ । बइठु तिम वाइं न ऊललइ ॥९२॥
 वरस एकिं काढत अंश । यदा तदा ते हुइ निःसंश ।
 एह पल्योपम नांम उद्धार । कोडा कोटि (डि) दशे एक सार ॥९३॥
 ते सागर दश कोडाकोडि । एक उत्सर्पिणि एहवी जोडि ।
 कालचक्र ते एर्ति भयु । ते पुदगलपरावर्ति गयु ॥९४॥
 अढाई दीपनु एह विचार । जिहां हुइ चंद सूरजनउ चार ।
 ए नरक्षेत्रतणी बांधणी । राति अनइ वासर सांधणी ॥९५॥
 अवर दीपि नही राति नइ दीह । थावर चंद सूरज विचि लीह ।
 चंद्र ज्योति जिहां तिहां चंद्रमा । तावड हुइ तिहां सवितार्यमा ॥९६॥
 सहस पंचास जोयण हुइ तेज । नही मार्हिं शशि-रविनां हेज ।
 देवलोकि अजूआलुं सदा । नरगि अंधारुं तेज न कदा ॥९७॥
 काल पल्योपम सागर तणी । त्रिभुवनि लेज्यो ए बांधणी ।
 राति दिवस कार्हि नही जिहां । सुर नारक आऊखइ तिहां ॥९८॥

ਵਸਤੁ - ੨ ॥

ਦੇਵਲੋਕਹਿੰ ਦੇਵਲੋਕਹਿੰ ਆਧੁ ਪਰਿਮਾਣ ।
 ਸੁਰ ਅਸੁਰ ਨਾਰਕਤਣਾਂ ਤੁਰ ਜਯੋਤਿ ਵਾਂਤਰ ਵਿਦਾਧਰ ।
 ਭਵਨ ਧਾਮ ਕੈਮਾਣਨਾ ਨਿਧਰ ਦੇਹ ਧਨੁ ਪਲਿਸਾਗਰ ।
 ਆਪਿ ਏਹਜਿ ਬਾਂਧਣੀ ਸ਼੍ਰੀਮੁਖਿ ਸ਼੍ਰੀਜਗਨਾਥ ।
 ਆਣਾਂਦਰਵਦੰਨ ਇਮ ਕਹਇ ਤੁ ਸੁਣਿਵੁੰ ਜੋਡੀਧ ਹਾਥ ॥੧੯॥

ਹਿਵ ਦੂਹਾ ॥

ਪੁਣਿ ਤਤਵ ਤ੍ਰੀਜੁੰ ਸੁਣਤ । ਭੇਦੇ ਬਿਤਾਲੀਸ ।
 ਪਹਿਲੁ ਸਾਤਾਵੇਦਨੀ । ਸੁਖ ਪਾਮਇ ਨਿਸਿ ਦੀਸਿ ॥੧੦੦॥
 ਬੀਜੁੰ ਗੋਤ੍ਰ ਤੰਚੁੰ ਲਹਇ । ਨਿਸ਼ਵ ਲਹਇ ਨਰ ਮਾਨ ।
 ਨਰਭਵ ਮੁਂਕੀ ਨਰ ਹਵਇ । ਤ੍ਰੀਜੁੰ ਸਾਭਿਨਿਆਂਨ ॥੧॥
 ਚਤੁਰੁੰ ਕਰਮ ਸੁ ਬਾਂਧੀਤੁੰ । ਅਵਰ ਗਤੀ ਜਿਣਿ ਹੋਇ ।
 ਮੁਨ(ਮਨ)ਕਾਨੁਪੂਰਕੀ ਤੇ ਕਹੀ । ਅੰਤਿਕਾਲਿ ਨਰ ਸੋਇ ॥੨॥
 ਪੁਣਿਪ੍ਰਕ੃ਤਿ ਗੁਣ ਪਾਂਚਮੁ । ਨਰ ਵੈਮਾਨਿਕ ਕਿਛੁ ।
 ਛੁਟੁੰ ਕਰਮ ਗਤਿ ਅਵਰਨੁੰ । ਬਦਾਂਤਿ ਸੁਰਲਢੁ ॥੩॥
 ਦੇਵਾਨੁਪੂਰਕੀ ਏ ਕਹੀ । ਸੱਤਮ ਪਣਿਦੀਧ ਸਾਰ ।
 ਪੁਣਿ ਪਸਾਇੰ ਆਠਮੁ । ਪੰਚ ਦੇਹ ਅਨਿਵਾਰ ॥੪॥
 ਨਵਮੁੰ ਸੁਰਨਾਰਕਤਣੁੰ । ਵੈਕਾਧ ਸਧਰ ਕਹਾਇ ।
 ਚਤੁਰਦਪੂਰਵਧਰ ਦਾਹਮੁੰ । ਸਧਰ ਆਹਾਰਕ ਜਾਇ ॥੫॥
 ਅਦਭੁਤ ਰੂਪ ਸਮਧ ਭਣੁੰ । ਏਕ ਹਾਥ ਪਰਿਮਾਣ ।
 ਸੀਮਾਂਧਰਸ਼ਵਾਮੀ ਕਹਨਇ । ਪ੍ਰਾਂਧੀ ਆਵਇ ਜਾਣ ॥੬॥
 ਤੇਜਸ ਨਇ ਕਾਰਮਣ ਬਿਛੂ । ਦੂ਷ਿਗੋਚਰਿ ਨਵਿ ਥਾਧ ।
 ਅਨਾਦਿਕਾਲ ਪ੍ਰਾਣੀ ਕਹਇ । ਸੁਗਤਿ ਲਹਇ ਤਵ ਜਾਧ ॥੭॥
 ਤੇਜਸ ਸਧਰ ਤਣਇ ਬੱਲਿ । ਉਦਕ ਆਹਾਰਇ ਭਾਤ ।
 ਪੁਣਿਪ੍ਰਕ੃ਤਿ ਅਗਧਾਰਮੀ । ਭੇਦਇ ਸਾਤਇੰ ਧਾਤੁ ॥੮॥

ਚਤੁਪਈ ॥

ਕਾਰਮਣ ਸਧਰ ਆਠਇ ਜੇ ਕਰਮ । ਜਿਣਿ ਆਧਾਰਿ ਰਹਿਧਾਂ ਏ ਮਰਮ ।
 ਏਤਿੰ ਭੇਦ ਹੂਆ ਛਿੰ ਬਾਰ । ਉਦਾਰਿਕ ਵੈਕਾਧ ਆਹਾਰ ॥੯॥

एहतणां विवरण सांभले । हाथ पग नख नइ आंगले ।
 ऊदारिक उपांग तेरमु । वैक्रय कहीइ छइ चऊदमु ॥१०॥
 पनरसमु आहारकोपांग । पुण्यप्रकृति लहइ अंग उपांग ।
 तेजस कार्मण सदा अनंग । निरमल पामइ सयर पंचांग ॥११॥
 हाड सवे हुइ मर्कट बंध । जिहां जिहां सयरतणी छइं संधि ।
 पाटु विचि खीली बंधेण । वज्रत्रष्प्रभनाराच संधेण ॥१२॥
 भेद एह सोलसमु कहिउ । संस्थान समचउरस लहिउ ।
 सतरसमउ गौरादिक वर्ण । सुंदर रूप नयण आकर्ण ॥१३॥
 धुरि अड्डार हुआ ओगणीस । देह सुगंध रस कहीइ वीस ।
 एकवीसमु सयर सुकुमाल । अति भारे नही हलूउ बाल ॥१४॥
 बावीसमु दीसइ दुद्धर्ष । रूपिं सहू आकंपइ पुरुष ।
 त्रेवीसमउ ए पुण संपजइ । सासोसास सुरभि ऊपजइ ॥१५॥
 पुण्यपसाइं एह चउवीस । आतपर्कर्म कहूं पंचवीस ।
 सभा सोभावइ नर एकलु । तेजकर्म सविहुंथी भलु ॥१६॥
 छब्बीसमु ए पुण्य प्रकृति । सत्तावीस मंथर गजगति ।
 अट्टावीसम कर्म निर्माण । नर तिर्यच अवयव शुभ जाणि ॥१७॥
 दस त्रसादि कर्म फल एह । छाया तावड जाणइ बेह ।
 भय त्रासिं ज विगलेंदिआ । ओगणत्रीस भेद ए कहिआ ॥१८॥
 बादरकर्म दीसइं तिसु देह । बांधइ भेद त्रीसमु एह ।
 पूरी पर्यासि हुइ एकत्रीसमइ । सयरि जीव एक बत्रीसमइ ॥१९॥
 थिरकर्म अस्थ्यादिक दंत । तेत्रीसमु दृढ होइ जंत ।
 नाभि ऊंचा अवयव जेतला । सरि लागिं हरखि केतला ॥२०॥
 भेद चउत्रीसम बोल्यु सोइ । शुभ कर्म सोभागी होइ ।
 ए पणत्रीस छत्रीसम छती । सुसरकर्म वाणी रसवती ॥२१॥
 आदेय कर्म सहू मानइ कहिउ । भेद सा[ड]त्रीसम इम निरवहिउ ।
 यशःकर्म पुंठि गुणग्राम । बोलिं ते अठत्रीसम नाम ॥२२॥
 सुरनर तिरिय संपूरण आयु । त्रिणि भेद एहू पुण थाय ।
 तीरथंकर जीव हुइ जगदीश । पुण्यतत्त्व ए बइतालीस ॥२३॥

ਪਾਪ ਤਤਵ ਹਿਵ ਬਾਸੀਂ ਭੇਦ । ਤੇ ਕਹਿਤਾਂ ਕੋਝ ਮ ਧਰੁ ਖੇਦ ।
 ਪਹਿਲੁੰ ਜੋਈ ਨਰਨਿੰ ਨਿਆਨ । ਤੇ ਪਾਂਚਈ ਜਿਣਿ ਕੀਧਾਂ ਧਾਨ ॥੨੪॥
 ਮਤਿਨਿਆਨ ਮਤਿ ਸੁੰਦਰ ਨਹੀਂ । ਸ਼੍ਰੁਤਨਿਆਨ ਜਾਇ ਸ਼੍ਰੁਤ ਵਹੀ ।
 ਅਵਧਿਨਿਆਨ ਪਾਪਿਂ ਨ ਊਪਜਾਇ । ਮਨਪਰ੍ਯਵ ਅੰਤਰਾਈ ਭਜਾਇ ॥੨੫॥
 ਅਢਾਈ ਦੀਪਿ ਨਰ ਤਿਰਿ ਜੇਤਲਾ । ਮਨੋਗਤ ਭਾਵ ਜਾਣਿੰ ਤੇਤਲਾ ।
 ਨਿਆਨ ਪੰਚਮ ਛਈ ਕੇਵਲਨਾਣ । ਚੁਲਦ ਰਾਜ ਆਮਲਾ ਪ੍ਰਮਾਣ ॥੨੬॥
 ਭਵ ਕੋਟੀ ਭਾਜਿ ਸੰਦੇਹ । ਤੇ ਜਿਣਿ ਪਾਪਿਂ ਦੀਧੁ ਛੇਹ ।
 ਛਤੀ ਲਾਛਿ ਅਵਸਰ ਪਾਮੀਇ । ਦਿਵਰਾਇ ਨਹੀਂ ਜਿਣਿ ਠਾ(ਵਾ)ਮੀਇ ॥੨੭॥
 ਤਦ੍ਯਮ ਕਰਤਾਂ ਲਾਭ ਨ ਹੋਇ । ਪੋਤਾਨੀ ਨੀਮੀ ਸਵਿ ਖੋਇ ।
 ਘਰਿ ਖਾਵਾ ਛਈ ਸੰਪਤਿ ਘਣੀ । ਪਈਂ ਰੋਗਿੰ ਕਾਧਾ ਰੇਵਣੀ ॥੨੮॥
 ਭੋਗਾਂਤਰਾਈ ਵਿਲਸਾਇ ਨਹੀਂ । ਸਕਲ ਲਾਛਿ ਜਾਸ਼ਵਾਇ ਤੇ ਸਹੀ ।
 ਹਿਵ ਉਪਭੋਗ ਕਹੁੰ ਜਿਣਿ ਰੁਲਿਤ । ਦੰਪਤਿ ਧੋਗ ਸਰੀਸੁ ਮਿਲਿਤ ॥੨੯॥
 ਹੁਇ ਨਪੁੱਸਕ ਕਈ ਰੂਸਣੁੰ । ਜੋਡ ਵਿਹੰਡਾਇ ਲਾਜਾਇ ਘਣੁੰ ।
 ਨਵ ਏ ਦਸਮੁੰ ਕੀਧਾਂਤਰਾਧ । ਸਮਰਥ ਰੋਗਿੰ ਬਲ ਨਵਿ ਥਾਧ ॥੩੦॥
 ਪਾਪਕਰਮ ਅੰਤਰਾਈ ਦਸਾਇ । ਅਦਾਪ ਦੇਖਾਇ ਹਾਥ ਜਿ ਘਸਾਇ ।
 ਨਵ ਆਵਰਣ ਬੀਜਾਂ ਛਈ ਜਿਸਾਂ । ਕਹੁੰ ਛਤਾਂ ਦੀਪਿ ਨਹੀਂ ਤਿਸਾਂ ॥੩੧॥
 ਚਕ੍਷ੁਦਰਸਨ ਨਿਧਨ ਨਿਲਾਡਿ । ਤਰਮ ਛਾਧਾਦਿਕ ਆਵਿੰ ਆਡਿ ।
 ਅਚਕ੍਷ੁਦਰਸਨ ਅਭਿਪ੍ਰਾਧ । ਅਪਰ ਇੰਦ੍ਰਧ ਬਲ ਹੀਣਾਂ ਜਾਧ ॥੩੨॥
 ਏਕ ਭੇਦ ਹਿਵ ਬੀਜਤ ਕਹਾਇ । ਵਿਸ਼ੇ਷ ਵਸਤੁ ਨਿਆਨਿ ਨਿਰਵਹਾਇ ।
 ਏ ਚਿਹੁਨਿੰ ਪਾਤਕ ਆਵਰਣ । ਨਿਦ੍ਰਾ ਪੰਚ ਕਹਿਤਾਂ ਦਿਤ ਕਣਣ ॥੩੩॥
 ਨਿਦ੍ਰਾ ਤੇ ਸੰਚਲਿ ਜਾਗੀਇ । ਸੁੱਖਿ ਸਮਾਧਿੰ ਵਤਾਇ ਲਾਗੀਇ ।
 ਨਿਦ੍ਰਾਨਿਦ੍ਰਾ ਬੀਜੀ ਸੁਣਤ । ਜਾਗਾਇ ਜੁਧਾਂ ਧੂਣਾਇ ਘਣਤ ॥੩੪॥
 ਪ੍ਰਚੁਲਾ ਨਾਮਿੰ ਹਿਵ ਸਾਂਖਲਤ । ਬਿਠਾਂ ਊਭਾਂ ਨਰ ਘਾੰਘਲਤ ।
 ਪ੍ਰਚੁਲਾ ਪ੍ਰਚੁਲਾ ਨਾਮਿ ਨਰੰਦਰ । ਹੀਡਾਇ ਹਾਲਾਇ ਨਿਧਨੇ ਨੀਦਰ ॥੩੫॥
 ਪੰਚਮ ਨਿਦ੍ਰਾ ਛਈ ਥੀਣਧੀ । ਤੇਹਨਾ ਗੁਣ ਨ ਕਹਿੰ ਖੀਣਧੀ ।
 ਦੂਢ ਸੰਘੇਣ ਧਣੀਨਿੰ ਤੇਹ । ਵਾਸੁਦੇਵ ਬਲ ਆਧੁੰ ਜੇਹ ॥੩੬॥
 ਗਜੇਂਦ੍ਰ ਵਿਣਾਸਾਇ ਨਿਦ੍ਰਾ ਸਮਾਇ । ਨਾਰਿ ਨਰਗਿ ਛ ਨਰ ਸਾਤਮਾਇ ।
 ਬਾਂਧਾਇ ਕਰਮ ਹੁਇ ਨਾਰਕੀ । ਪਾਪਕਰਮ ਓਗਣੀਸਾਇ ਬਕੀਂ ॥੩੭॥

पापिं नीचइ कुलि अवतरइ । दुर्गतिमाहिं असातां फिरइ ।
 नरग तिर्यंचि दुख भोगवइ । पापोदय एकवीसइ हवइ ॥३८॥
 साचा देव अनइ गुरु धर्म । आस्ता नावइ पातक कर्म ।
 कुगुरु कुदेव अनइ कुधर्म । तेह ऊपरि सद्हणा शर्म ॥३९॥
 बावीसमु जे भेद मिथ्यात । थावर दसइ कहुं सुणि वात ।
 पाप बहुल एकेद्वी थाय । तावडथी छायां न जवाय ॥४०॥
 गमण छांहथी तावडि नही । एक भेद एहु ते सही ।
 सूखिमकर्म निगोदी हूआ । ए बिहू भेद अच्छि जूजूआ ॥४१॥
 अनंतकाय मिली एक शरीर । थावर च्यारि भेदि सुणि वीर ।
 कर्म अथिर जीव सघलां अंग । अशुभकर्म पुरुषारथ भंग ॥४२॥
 दरशन दीठुं कहि न सुहाइ । कर्म दुभागी ए कहिवराइ ।
 दुःस्वरकर्म वचन कर्णमूल । अनादेय कहण समतूल ॥४३॥
 अयशकर्म यश नु इह निटोल । दशइ भेद थावरना बोल ।
 नरय त्रिकक होइ नारकी । मरवा वंछइ नारक थकी ॥४४॥
 न मराइ पूरइ नरकायु । नरगानुपूरवी ते कहिवराय ।
 अंत समइ ऊर्धगति करइ । कर्म ताणीनइ नारकि धरइ ॥४५॥
 विर्चि भव पूरी तिरिआं तणउ । कर्म बहुल जीव नरकि घणउ ।
 पातक भेद कहिया पांत्रीस । हिव कसाय सुणिज्यो पंचवीस ॥४६॥

वस्तु - ३

च्यारि चउकुं च्यारि चउकुं भेद इम जाणि ।
 नोकसाय नव अपर छइं क्रोध मान मायातिलोभी ।
 पक्ष चउमासुं वरसनइ जन्म शुद्ध ते रहइं थोभी ।
 सञ्ज्वलनु पचखाणनइ अपच्चखाणु अनुबंध ।
 आणंदवर्द्धन इम कहइ सोल कसाय बंध ॥४७॥

हिव - दूहा ।

अनंतानु नामि सबल । क्रोध मान माया लोभ ।
 समकित ते पामइ नही । मरणि नारकि थोभ ॥४८॥

च्यारइ ए अपच्चखाणीआ । देशविरति हुइ हाणि ।
 वर्षावधि परमायु जे । गति तिर्यंची जाणि ॥४९॥
 चउमासी पच्चखाणीआ । नार्मि च्यारि कसाय ।
 भाव चारित पामइ नही । मानवनी गति जाय ॥५०॥
 संज्जलना पखवाडीआ । न हवइ ते अरिहंत ।
 वैमानिकपद पामस्यइ । मोक्ष न जाइ जंत ॥५१॥
 नोकसाय नव सांभलु । हास्यकर्म नितु हास ।
 रतिकर्मि (र्मि) मन थिर करइ । मनोहर दीठिं ठांम ॥५२॥
 अरतिकर्म कीही रति नही । वनि निवरां पुरि लोक ।
 शोककर्म अहनिसि धरइ । स्नेह वियोगिं शोक ॥५३॥
 भय कर्मि बीहइ बहुल । जोइ दुगंछा कर्म ।
 मुह मचकोडी थुंकीइ । विरुडं देखी मर्म ॥५४॥
 पुरुषवेद पूला समु । हेलां भटकी जाय ।
 ख्रीवेद कोऊ जसिड । बलती किम न ओल्हाय ॥५५॥
 नयरदाह नपुंसकी । अहनिसि जलण न जाय ।
 पार्पि पंचवीसइ लहइ । साठि भेद इम थाय ॥५६॥
 तिरियागति बेहू कही । जीव तिरिजं च जाइ ।
 तिरियानुपूरवी अवरथी । ताणिउ त्तिरिया थाइ ॥५७॥
 एक बि ति चउर्दिआ । कर्मबद्ध गति च्यारि ।
 छ्छइ भेद ए भोगवइ । पुनरपि कुगति मझारि ॥५८॥
 रासभ ऊंटतणी परि । चालइ विरुई चालि ।
 उपघातकर्म पीडा घणी । कंठि दशनि पुण गालि ॥५९॥
 वर्ण गंध रस फरसणा । विरुआं पामइ पापि ।
 कालु कडूउ खार पण । देह दुगंधि व्यापि ॥६०॥
 बाहुतरि हूआ हर्वि । पढम एकीका टालि ।
 पंच संघेण संस्थान पण । व्यासी भेद संभालि ॥६१॥

हिव चउपई ।

एकसउ वीस शुभाशुभ कर्म । पुण्य प्रकृति बइतालीस शर्म ।
 वर्ण गंध रस फरिस विचारि । शुभ कइ अशुभ गणउ एक ठारि ॥६२॥
 ब्यासी भेद पातक जे समुं । आश्रव तत्त्व कहुं पांचमुं ।
 जेहना छइ बइतालीस भेद । किंचनमात्र विचार विछेद ॥६३॥
 काया कान आंखि नासिका । भव रलवु सवि रसना थका ।
 ए पांचइ इंद्री मोकलां । प्रेरक च्यारि कसाय ओकलां ॥६४॥
 नवइ एह आश्रव मूलगां । पंचाणुब्रत छइ ओलगां ।
 हणइ जीव जंपइ अलीक । चोरी चांब चोरी निरभीक ॥६५॥
 अलकसमल कस मेलु करइ । ए पांचइ आश्रव आचरइ ।
 मन वचन काया त्रिण्ण योग । सतर भेद संयम संयोग ॥६६॥
 जेह वैरागी रुधि सहू । पापी ते प्रवर्तावइ बहू ।
 सहर्जि लार्गि क्रिया पंचवीस । कहितां कोइ न धरज्यो रीस ॥६७॥
 पहिली जे कायाकी क्रिया । चपलपर्जि चालइ विक्रिया ।
 बीजी अधिकरणि ऊपजइ । खटक शाल पांचे नीपजइ ॥६८॥
 त्रीजी कहीइ प्रदेषिकी । राग-द्वेष आणइ मन थकी ।
 पारितापनकी चउथी खरी । आपघात परघार्ति करी ॥६९॥
 प्राणातिपातकी मांड अजाण । स्वर्ग वांछता कार्दि प्राण ।
 ए पांचइ क्रिया मूलगी । वीस ऊपर्जि एहं लगी ॥७०॥
 गाडावाही खेत्रांभ । आरंभकी क्रियानां थंभ ।
 दास दीकोलां ढोर अन्नादि । वहुरइ वेचइ गृही बनीआदि ॥७१॥
 जैनधर्म मायां आचरइ । मिथ्याश्रुत सद्हणा करइ ।
 नही पचखाण अवरती होइ । हड कूकड कलि जोणां जोइ ॥७२॥
 पृष्ठिकी क्रिया सुकुमाल । फरसइ रोम पशू स्त्री बाल ।
 प्रातिकी परघरि जे घटइ । रूडी वस्त देखी आवटइ ॥७३॥
 निज सामंतोपात अवास । लोक वखार्जि धरइ उल्हास ।
 अथवा दूध दही धी तेल । पर्दि जीव ते पातल वेलि ॥७४॥

ਹਿਵ ਪਨਰਮੀ ਨੇਸਤਿਥਕੀ । ਪਰਵਸਿ ਕੀਜ਼ਿ ਰਾਜਾ ਥਕੀ ।
 ਅਰਹਟ ਪਾਵਟ ਜੰਤ੍ਰ ਪਖਾਣ । ਕਿਧਾ ਊਪਜ਼ਿ ਨਹੀਂ ਤਸ ਮਾਣ ॥੭੫॥
 ਚੀਤੇ ਸ਼ਵਾਨਿ ਆਹੇਡੁ ਕਰਇ । ਅਥਵਾ ਜੇ ਕਾਰੁੰ ਆਚਰਿੰ ।
 ਮਾਰਇ ਜੀਵ ਹਾਥਿੰ ਹਥੀਆਰਿ । ਸ਼ਵਾਹਸਿਤਕੀ ਕਿਧਾ ਅਨਿਵਾਰਿ ॥੭੬॥
 ਆਨਿਆਪਨਿਕੀ ਦਿਇ ਆਦੇਸ਼ । ਜੀਵ ਮਰਾਵਇ ਪਾਪ ਨਿਵੇਸ਼ ।
 ਅਪਰ ਕਰਾਵਇ ਨ ਕਰਇ ਧਣੀ । ਕਿਧਾ ਕਹੁੰ ਹਿਵ ਵੀਆਰਣੀ ॥੭੭॥
 ਅਹਿੰਡ ਵਸਤ ਵਖਾਣਇ ਘਣੁੰ । ਵੇਚਾਵੀ ਨਰ ਬਹਇ ਆਪਣੁੰ ।
 ਦੋ ਭਾਸੁ ਦਲਾਲੀ ਕਰਇ । ਬੇਹੂ ਜਣ ਵੰਚੀ ਬੂਡਇ ਮਰਇ ॥੭੮॥
 ਵਸਤਹ ਲਾਵਇ ਸੂਨਿੱ ਮਨਿ । ਓਘਸੰਜਾ ਤੇ ਆਪਇ ਅਨਨ ।
 ਨਿਦ੍ਰਿੰਧਸ ਦਧਾ ਨਹੀਂ ਯੋਗ । ਤੇ ਕਹੀਇ ਕਿਧਾ ਅਣਭੋਗ ॥੭੯॥
 ਲੋਕਕਿਰੁਦ਼ ਜੇ ਕੀਧਇ ਕਾਂਮਿ । ਬਧ ਬੰਧਨ ਪਾਮਇ ਜਸ ਨਾਮਿ ।
 ਪਰਲੋਕਿਕਿ ਨਾਰਕਗਤਿ ਲਹਇ । ਤੇ ਅਣਕਕਂਖਪਚਵਿੰਆ ਕਹਇ ॥੮੦॥
 ਆਰਤਰੈਦ ਧਧਾਂ ਮਨਿ ਧਰਇ । ਕਾਧਾ ਕਠਮਦ ਅਹਨਿਸਿ ਕਰਇ ।
 ਵਧਣਿ ਤਚਣੁੰਖਲ ਵਾਣੀ ਸਹੀ । ਅਨਾਪਤਗ ਕਿਧਾ ਤੇ ਕਹੀ ॥੮੧॥
 ਸਾਮੁਦਾਨਕੀ ਕਿਧਾ ਏ ਵਲੀ । ਹਾਟ ਅਵਾਂਸ ਕਰਿ ਸਹੂ ਮਿਲੀ ।
 ਕਾਹਿ ਊਪਰਿ ਆਵਇ ਅਤਿਨੇਹ । ਕਿਧਾ ਪ੍ਰੇਮਕੀ ਕਹੀਇ ਤੇਹ ॥੮੨॥
 ਕੋਪਿ ਨਿਰੰਤਰ ਕੀਜ਼ਿ ਫੇ਷ । ਬਾਂਧਇ ਕਰਮ ਕਿਧਾ ਪ੍ਰਫੇ਷ ।
 ਧਤਿ ਰਹਿੰ ਈਰਧਪਥਿਕੀ ਕਿਧਾ । ਬੋਲਇ ਚਾਲਇ ਤੇ ਵਿਕਿਧਾ ॥੮੩॥
 ਸੂਕਸਕਰਮ ਬੋਧਇ ਕੇਵਲੀ । ਸਸਤ ਬਿਹੁੰ ਤਾਈ ਤੇ ਵਲੀ ।
 ਏ ਪੰਚਵੀਸ ਕਿਧਾ ਪਾਤਕੀ । ਆਸਤਰ ਤੇ ਬਇਤਾਲੀਸ ਬਕੀ ॥੮੪॥
 ਪਾਂਚ ਤਤਵ ਏ ਗ੃ਹੀਨਿੱ ਛਵਿ । ਸਾਧੁ ਤਣਿੱ ਤੇ ਨਾਵਿ ਲੰਬਿ ।
 ਹਿਵ ਬਹੁੰ ਸੰਵਰ ਤਤਵ ਕਹੁੰ । ਬੋਧਿਬੀਜ ਜਿਮ ਮਨ ਸ਼ੁਦ਼ਿ ਲਹੁੰ ॥੮੫॥
 ਜੇਹਨਾ ਛਿੱ ਸੱਤਾਵਨ ਭੇਦ । ਤਿਣਿ ਆਚਰਣਿ ਕਰਮ ਹੁਇ ਚਲੇਦ ।
 ਪਾਂਚ ਸੁਮਤਿਨਿੱ ਤ੍ਰਿਣਿ ਗੁਪਤਿ । ਧਰਮਤਣਾ ਦਸ ਭੇਦ ਸੰਧਤਿ ॥੮੬॥
 ਪਰੀਸਹ ਬਾਵੀਸ ਅਖਚ । ਬਾਰ ਭਾਵਨਾ ਚਾਰਿਤ੍ਰ ਪਾਂਚ ।
 ਫਾਰ ਕਹਿਧਾ ਏ ਸੱਤਾਵਨ । ਆਣਿੱ ਸੰਵਰ ਪ੍ਰਾਣੀ ਧਨ ॥੮੭॥
 ਯੁਗ ਝੁੰਸਰ ਦ੃ਣਿ ਅਵਲੋਕਿ । ਚਾਲਇ ਪਗਿ ਪਗਿ ਜਧਾਂ ਲੋਕਿ ।
 ਡਾਬੁੰ ਜਿਮਣੁੰ ਜੋਇ ਨਹੀਂ । ਪਹਿਲੀ ਈਰਧਸੁਮਤਿ ਏ ਕਹੀ ॥੮੮॥

भाषासुमति राखइ पर आप । सत्यवचन बोलइ निंपाप ॥
 दोष बयालीस छइं जे तणा । ल्यइ आहार रहित एषणा ॥८९॥
 कांई वस्त मुकइ ल्यइ जिहां । आदानसुमति पुंजीजइ तिहां ।
 मल मातरुं सलेखम थुंक । परठतां पुंजवुं अचूंक ॥९०॥
 आर्त रौद्र न करइ मनि ध्यांन । धर्म शुक्ल धरतां हुइ ग्यांन ।
 मौन करइ जव काढइ वाण । धर्मकथा मुखि वस्त्र वराणि ॥९१॥
 बार आगारे काउसग धरइ । कायगुपति संचल नवि करइ ।
 आठइ प्रवचनमाता कही । हिव बावीस परीसह सही ॥९२॥
 क्षुधा खमइ अशुद्ध नवि ग्रहइ । सचित न पीइ तृष्णा सहइ ।
 आर्ग न तापइ सीतल खमइ । स्नान नवायु ऊऱ्हाला समइ ॥९३॥
 डांस मसा सहि काउसगि रहियां । वस्त्र न वांछइ जूना लहियां ।
 अशुभ ठाम च्छइ नही आरत्ति । सरूप देखी न धरइ चिति ॥९४॥
 गाम क्षेत्र कुल ठाम न मोह । करइ नवकल्पि विहारिं सोह ।
 का[उ]सगध्यांन जिहां नैषेधकी । भय न करइ सर्वादिक थकी ॥९५॥
 पाटि पीढ सिय्या लंपणी । दुख नाणइ संकीरण भणी ।
 अजाण लोक बोलि वैभाख । आक्रोस परीषह खमीइ लाख ॥९६॥
 लोहि लाकडि कोइ मारइ दुष्ट । छांडइ प्राणपर्णि खेद न कष्ट ।
 मोटां कुल मुझ किम याचना । दुःख न आणइ मनि वासना ॥९७॥
 न लहूं भिक्षा हूं सूझती । अपर लहिं दुख नाणइ यती ।
 व्याधि परीसह सबलु रोग । सहइ पुण न करइ सावद्ययोग ॥९८॥
 धर्म पणइं मल टालइ नही । गुण सतकारि न गरबी लही ।
 न्यांन भणित पणि न धरइ मांन । विद्या नावइ खेद न अन्यान ॥९९॥
 देवगुरुनइ धर्म आचरइ । समकित लही साचु नवि करइ ।
 ए बावीस परीसा खमइ । साधु सदा आत्माइ दमइ ॥२००॥
 हिव दश भेद यतीनु धर्म । क्षमानिधि क्रोध नही ए मर्म ।
 आर्जव माया नही सुकुमाल । मार्दव वाणी अमीय रसाल ॥२०१॥
 मुगति मुंक्या संसारी सुक्ख । बार भेदि तप सहवा दुक्ख ।
 संयम सर्वजीव साचवइ । सत्य वचन सिद्धांत जि लवइ ॥२०२॥

शौच अदत्त काँई नवि ग्रहइ । धर्मोपगरण चऊद संग्रहइ ।
 द्रव्यादिक ममता नवि करइ । ब्रह्मचर्य नव भेदे धरइ ॥२०३॥
 ए दश भेद यतीना कहिया । भावन बार भेद संग्रहिया ।
 घर घरणी धन वय अस्थिरिं । माया म धरु इणि विस्तरि ॥४॥
 आव्यइ मरण शरण नही कोइ । नवि आपणु पिआरु लोइ ।
 लाख चउरासी जीवा योनि । भमता भव नीगमीआ सुनिए ॥५॥
 एकलु आविउ एकलु जाइ । को कहिनु साथी नवि थाइ ।
 असुचिपणुं तुह देह मझारि । मूँत्र परीखा श्लेष्म मलधारि ॥६॥
 आश्रवद्वार मिथ्यार्ति भरिउ । जीव कसाय अवरर्ति आवरिउ ।
 संवरभाव विरति शुभ ध्यान । धरतां पामइ पंचम न्यान ॥७॥
 नवमी कर्मनीज्ञार भावना । नारक दुक्ख सहियां मन विना ।
 धर्मभावना इणिपरि धरइ । सार मनोरथ धर्मि सरइ ॥८॥
 लोकभावना चऊदइ राज । चिंतइ पिडि सरइ सवि काज ।
 बोधिभावना दुर्लभ लहइ । शिवपुरगामी ते सद्दहइ ॥९॥
 ए बारइ भावन भावीइ । चडती पदवी तु फावीइ ।
 हिव पांचइ चारित्र विचार । पालइ ते पामइ भवपार ॥१०॥
 पहिलुं सामाइकु ऊचरइ । सर्व सावद्य मनसां परिहरइ ।
 बीजु चरित छ्येदोपस्थान । पढम चरम वारइ जिन मांन ॥११॥
 छजीवकाय जउ जाणइ खरइ । पंचमहाव्रत तउ ऊचरइ ।
 त्रीजुं छइ परिहार विशुद्ध । अरण्यमाहि रइ जूड बुद्ध ॥१२॥
 नव जण सरसु जई तप करइ । अढार महीना जालइ खरइ ।
 जउ उपसर्ग परीसह खमइ । तु गच्छमाहि आवीनइ जमइ ॥१३॥
 चउथुं चरित सूखिमसंपराय । दशमइ गुणठाणइ चडि जाय ।
 क्रोध मांन माया परिहरइ । लोभ उदय अति सूखिम धरइ ॥१४॥
 मन परणाम चोथानी वातु । चारित पंचम जह ख्यात ।
 कषाय सर्वनां काढियां मूल । उदय न आवइ सूखिम थूल ॥१५॥
 त्रिणि चारित्र हिवइ छति गयां । पहिलां बि चारित ते रहियां ।
 इणि परि संवर सत्तावन् । भेद आणइ जे हुइ कृतपुन्न ॥१६॥

वस्तु - ४

सुमति पंचइ सुमति पंचइ । तिनि गुपति ।
 परीसह बावीस छइं दशइ भेद यति धर्म आणउ ।
 बारइ भावु भावना पंच भेद चारित जाणउ ।
 परिहारादिक तिनि गय चारित वर्तइं दुनि ।
 श्री आणंदवर्द्धन इम कर्हि संवर सत्तावन्न ॥१७॥

हिव - दूहा ॥

तत्त्व नीझर जे सातमुं तेह तणा कहुं भेद ।
 बार प्रकारे तप करू कर्म हुइ जिणि छेद ॥१८॥
 छइ भेद तप बाह्यना । अनशन धुरि दिन एक ।
 षटमासाविधि बोलीइ । जउ हुइ हीइ विवेक ॥१९॥
 ऊनोदरता पुरुषर्णि । कवल कहिया बत्रीस ।
 नारि अद्वावीसइ घटिं । नपुंसक पणवीस ॥२०॥
 ए उतकृष्ट संखेपीइ । त्रीजुं वृत्तिसंक्षेप ।
 साधु द्रव्यादिक नवि ग्रहि । श्रावक एह आक्षेप ॥२१॥
 चऊद नियम जे दिन प्रति संभारी पचखाण ।
 संध्यां तेह संक्षेपीइ । जे भवियण हुइ जाण ॥२२॥
 रसत्याग षटरसतणा । केता लेवा नीम ।
 कायक्लेश लोचहतणु ताप सहइ अनुहीम ॥२३॥
 संलीनता त्रिवर्धि कही इंद्रीय मन वच काय ।
 ओही तेह संखेपीइ बादर तप इम थाय ॥२४॥
 अबिंभतर तप भेद छइ आलोयण गुरु पासि ।
 तप दीधुं पहुचाडीइ मन शुद्धि गृहवासि ॥२५॥
 विनय विशेषि कीजीइ थिवरां अनइ गुणवंत ।
 अभ्युत्थान आस दीइ वंदइ विनई संत ॥२६॥
 वेयावच्च दश तप करइ आयरीयोवज्ञाय ।
 ज्ञान तपश्ची बालनइं अन्न पान गम खाय ॥२७॥

ਪਥਵੁਂ ਗੁਣਵੁਂ ਪੁਚਿੜਿਵੁਂ ਚਿਤਨਧਰਮ ਉਪਾਧ ।
 ਚਤੁਰਥਤ ਤਪ ਏ ਜਾਣਿਵਤ ਜੇ ਪੰਚਵਿੰਧਿ ਸਜ਼ਾਧਾਧ ॥੨੮॥
 ਆਰਤੈਂਦ੍ਰ ਟਾਲਇ ਸਦਾ ਸ਼ੁਕਲ ਧਰਮ ਮਨਿ ਧਿਆਨ ।
 ਸਧਰ ਸਗਤਿ ਕਾਤਸਗ ਕਰਇ ਨਤ ਹੁਇ ਹੀਯਡਇ ਸਾਨ ॥੨੯॥

॥ ਚਤੁਪਈ ॥

ਇਮ ਤਪ ਕਰਿਵੁ ਬਾਰੇ ਭੇਦਿ । ਇਣਿਪਰਿ ਕਰਮ ਤਣੁ ਹੁਇ ਚੜੇਦਿ ।
 ਤਪ ਘਰਣੀ ਤਪਸਾਮ ਮਾਂਕਡੀ । ਸ਼ਰਮ ਹਾਥਤ ਕਰਮਸੁਂ ਕੁਦਲੀ ॥੩੦॥
 ਬੰਧ ਤਤਵ ਸਾਂਭਲਾਧੋ ਸਹੂ । ਸੂਕਖ ਵਿਚਾਰ ਅਛਇ ਤੇ ਬਹੂ ।
 ਜੇਹਥੀ ਕਾਲ ਅਨਾਂਤੁ ਰੁਲਇ । ਜੀਵ ਕਰਮ ਬੰਧਨ ਇਮ ਮਲਇ ॥੩੧॥
 ਟੂਧ ਅਨਇ ਪਾਣੀ ਜਿਮ ਏਕ ਮਾਟੀ ਧਾਤੁ ਅੰਚਿ ਏਕਮੇਕ ।
 ਲੋਹ ਧਭਿਤ ਜਿਮ ਅਗਨਿ ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਜੀਵਕਰਮ ਤਿਮ ਮਿਤ੍ਰ ਨਿਵੇਸ਼ ॥੩੨॥
 ਦੈਵ ਕਹੀਇ ਤੇ ਪ੍ਰਾਚੀ ਕਰਮ ਭੇਟਘਤ ਜੀਵ ਸਹਇ ਦੁਖ ਸ਼ਰਮ ।
 ਵੈਰਿ ਭਾਵਿ ਰਹਿੰ ਏਕਠਾਂ ਤੇਹ ਊਪਰਿ ਸੁਣਿਯ੍ਯੋ ਇਮ ਤਠਾਂ ॥੩੩॥
 ਸਰ੍ਪ ਤਣਇ ਮਸਤਕਿ ਮਣਿ ਦਾਢ । ਕੋਮਲ ਜੀਭ ਦਸਨ ਛਿੰ ਗਾਢ ।
 ਘਰ ਭੀਤਰਿ ਮੂੰਸਾ ਮੰਜਾਰਿ । ਮਾਖੀ ਚਿਮਨ ਵਿਣਾ ਨਿਵਾਰੀ ॥੩੪॥
 ਦੀਵਾ ਤੇਜ ਮਘੀ ਸਾਮਲੀ ਜੀਵ ਕਰਮ ਤਿਮ ਰਹਿਯਾਂ ਬੇ ਮਲੀ ।
 ਜਾਣਇ ਜੀਵ ਕਰਮ ਭੋਲਵੁਂ ਵਾਂਛਇ ਕਰਮ ਜੀਵ ਰੋਲਵੁਂ ॥੩੫॥
 ਕਰਮਤਣਾਂ ਬੰਧਨ ਛਿੰ ਚਾਰਿ ਪ੍ਰਕ੃ਤਿ-ਥਿਤਿ-ਰਸ-ਪ੍ਰਦੇਸ਼ ਵਿਚਾਰਿ ।
 ਜਿਮ ਕੋ ਬਾਂਧਇ ਵੈਦ ਗੋਟਿਕਾਂ । ਵਾਟਇ ਓਸਡ ਨਹੀ ਮੋਟਿਕਾਂ ॥੩੬॥
 ਤੇਹਮਾਹਿ ਪੁਣ ਏ ਚਿਹੁ ਬੰਧ ਪਹਿਲੁਂ ਪ੍ਰਕ੃ਤਿ ਕਹੁਂ ਏ ਖੰਧ ।
 ਕੇਤਲੀ ਗੋਲੀ ਟਾਲਇ ਵਾਧ ਏਕ ਜਾਣੀਂਸਿ ਪਿੱਤ ਜਿ ਜਾਧ ॥੩੭॥
 ਬਹੁਮੂਲੀ ਸਬਲਾਈ ਕਰਇ ਕੇਤਲੀ ਗੋਲੀ ਸ਼ਲੇਸ਼ ਤਪਹਰਇ ।
 ਜਵਰ ਫੇਡਇ ਗੋਲੀ ਕੇਤਲੀ ਸਨਿਪਾਂਤ ਜਾਇ ਤੇ ਭਲੀ ॥੩੮॥
 ਇਮ ਗੁਣ ਦਾਇ ਤੇ ਪ੍ਰਕ੃ਤਿ ਸੁਭੋਵ । ਬੀਜੀ ਸਥਤਿ ਬਾਂਧਇ ਇਣ ਭਾਵਿ ।
 ਦਿਵਸ ਮਾਸ ਵਚ਼ਾਰ ਪਰਮਾਧੁ ਤੇ ਊਪਹਿਰੀ ਬਣਸੀ ਜਾਧ ॥੩੯॥
 ਥਿਤਿ ਏ ਕਹੀਇ ਰਸਨੀ ਵਾਤ ਖਾਰੀ ਖਾਟੀ ਮਧੁਰੀ ਜਾਤਿ ।
 ਤਾਜੇ ਓਸਡਿ ਸਰਸੀ ਹੋਇ ਜੂਨੇ ਵਿਰਸੀ ਲਾਗਇ ਸੋਇ ॥੪੦॥

तोल प्रमाण कहीइ प्रदेश इम गोलीना भेद विशेश ।
 तिम प्राणी पुदगल संग्रही बांधइ कर्म जगमाहिं रही ॥४१॥
 न्यान दर्शन चारित्र आचरइ । प्रगट करइ सुख दुख छावरइ ।
 प्रकृतिबंध कहीइ प्राणनु । बीजु थिति भेदे आयुनु ॥४२॥
 अंतर्महूर्त्त एक अड बार जघन्य कर्म थिति ए अवधारि ।
 कोटाकोटि अपर बांधणी वीस त्रीस सत्तरि कर्म तणी ॥४३॥
 ए उतकृष्ट जाणु परमायु इणिपरि थिति ए बांधी जाय ।
 घण्यु घणेरुं बंधन थाय ए अनुभाग रस कहिवराय ॥४४॥
 पुण तिण बंधनि करइ प्रदेश एक पुदगल बहुला लवलेश ।
 बंध तत्त्वना च्यारि प्रकार किंचन मात्र कहिउ विचार ॥४५॥
 नवमुं तत्त्व विचारुं मोक्ष ते(ति)हां अविहड अनंता सौक्ष ।
 कर्मतणां बंधन जो मठी जिम अग्यारांगई(?) सोगठी ॥४६॥
 सविहुं जीव सरीखां सुक्ख अंतरभेद न दीसइ मुक्ख ।
 तिहाँइ भेद कहिं केवली नव प्रकारि होइ ते वली ॥४७॥
 सकल लोक मस्तकि ते सही नास्तिकमत ते मार्न नही ।
 तेह संदेह भांजेवा अरथ एक जि नाम हुइ समरथ ॥४८॥
 जीव देव घट पट जिम धर्म जगि नियति छइं एह जि मर्म ।
 जोड नाम हुइ अथ नही जिम छइ राजपुत्र ते सही ॥४९॥
 वृषभसींग नइ चांपा फूल महिषशृंग पुन अर्कह तूल ।
 इत्यादिक छइं नही ते किस्युं बंध्या सुत खरशृंग न इस्युं ॥५०॥
 तुरंगमसींग कुसुमआकाश नाम अछिं पुण वस्त विनाश ।
 जिहां संदेह मोक्ष एक नाम छइ इम निश्चइं उत्तम ठाम ॥५१॥
 बीजु भेद मोक्ष कुण जाइ नारक तिरिया गति न जाइ ।
 एकेद्वी विगलेद्रीय नही पंचेद्री कोइ जाइ सही ॥५२॥
 त्रीजु भेद षट जीवनिकाय त्रस माहिथी मानव जाय ।
 अभव्य जीव जाइ नही कदा भव्य हुइ ते जाइ सदा ॥५३॥
 च्यारि भेद ए पंचम कहिं । असनीआ ते मो[क्ष] नवि लहिं ।

लहिं संनीआ मोक्ष अखंच चारित भेद अँछि जे पंच ॥५४॥
 पहिलां बिहुं चारित्रना धणी थाइं संसारिं रेवणी ।
 यथाक्षात् चारित्र जव लहइं मोक्ष जाइ ते केवलि कहइं ॥५५॥
 भेद सातमइ समकित पंच पहिलुं उपशम विवरुं तं च ।
 कहीइं समकित पामितं नही आयुकर्म स्थिति निश्चइ कही ॥५६॥
 अवर कोटाकोटि सातइ कर्म आण्या माहि करी जीव धर्म ।
 मन चोखइ लाधुं समकित अंतर्महृत्त मिथ्या गिडं चित्त ॥५७॥
 ते लव पुदगल वेइ नहि पुनरपि समकित थिरता नही ।
 मिथ्या भाग मझ्लु ढग नूढ । मन चोखइ समकित ढग हूड ॥५८॥
 इम बिहु ढगला जूआ धरइ मिश्र भाग ते त्रीजु करइ ।
 जिम कोदिरा भेदि त्रिहु हुआ मीण्या मिश्र सूधा ते जूआ ॥५९॥
 समकित मिथ्या विचि जे समइ अनंतानुबंध आवित तिहां उदय ।
 कलुष समइ सास्वादन तेह खीर खांड घृत जिम जमीआं जेह ॥६०॥
 वमतां स्वाद वेइ जेतलउ सास्वादन समकित एतलउ ।
 पंच समकितना सुणिज्यो मर्म । अकाम निर्झरा हणीआ कर्म ॥६१॥
 तव लाधुं उपशम समकित वमतां आस्वादन दृढ चित्त ।
 क्षायोपशमिक चोखुं मन्न वर्तमान पामइ त्रिणि धन्न ॥६२॥
 क्षपक श्रेणि चडतां त्रिणि भाग । छेहलु वेदक समकित राग ।
 मिश्रकर्म क्षप्यां सवि सात तड क्षायक समकितनी वात ॥६३॥
 जिणि पामीजइ मोक्ष दूआर पुनरपि गमण नही अवतार ।
 आहारक संसारी जीव अणाहार मोक्ष जाइ सदैव ॥६४॥
 तुं मइ घातकि दर्शन च्यारि । चक्षु अचक्षु अवधि त्रिणि वारि ।
 केवलदर्शन होइ मोख । पंच न्यानमाहि कुणि संतोष ॥६५॥
 मति श्रुति अवधि न्यान ए तिणि मनपर्यव केवल शिव सरण्ण
 ए चिहु मुगति न पामइ जीव पंचम केवलन्यान सदैव ॥६६॥
 इणि दश थानकि पामइ पार शेषि अनंत भमइ संसार ।
 गर्भज मानव इंद्रय पंच मोक्ष तेहं छइ अपरां वंच ॥६७॥

प्रथम द्वार ए बीजुं सुणेड अभव्यजीव पाहिं अनंता गुणउ ।
 द्रव्यप्रमाण हिव त्रीजुं द्वार चऊद राजमाहि शब कुण वार ॥६८॥
 लोकत्तणउ असंख्यातु भाग मुगति भुइरुं धीर ही माग ।
 लख पणयाल जोयण वाटुली मुगतिक्षेत्रमाहिं तेह वली ॥६९॥
 चउथुं द्वार कहुं फरसना सिद्धप्रदेश छइं आकाशना ।
 मध्य जोयण चउवीसे भागि सिद्ध रहिया छइं छेहलइ मा(भा)गि ॥७०॥
 क्षेत्र एह फरसना विशेस चिहु दिशि रुद्ध आकाश प्रदेश ।
 दीपक तेज रुंधइ आकाश परसना सात प्रदेसी जास ॥७१॥
 पंचम सिद्धतणु कहि काल सिद्धि गयु जीव आदि विशाल ।
 मुगति क्षेत्रि छइं सिद्ध अनादि आदि न अंत नही बनी आदि ॥७२॥
 अंतर द्वार छटुं हिव कहिं सिद्ध टली वली सिद्ध जिनुहिं ।
 सिद्ध अंतर नही सपतम द्वार केता मुगति छइं सिद्ध न पार ॥७३॥
 एक निगोद अनंतु भाग । जही पूछइं तही एह जि वाग ।
 अष्टम द्वार सिद्ध स्यइ भावि तेहुं पंच प्रकारि चलावि ॥७४॥
 राग रोसनुं कर्म जि नही उपशमक बीजुं ए रही ।
 त्रीजुं क्षायोपशभिक पाव चउथुं क्षायकवर जइ भाव ॥७५॥
 पांचमुं पारणामिक सही कर्म क्षप्यांतु शिवगति लही ।
 भव्याभव न होइं कदा जीव अजीव नही ए सदा ॥७६॥
 क्षायिकनइ पारणामिक बेत वर्तइं भावि सदा सिद्ध तेत ।
 अलपबहुल नवम्युं ए द्वार तेह तणउ बोलुं उद्घार ॥७७॥
 पुरुष नारि नपुंसक वेदि सिरज्या नही कीधा कुणि छ्हेदि ।
 तेह नपुंसक दीक्षा लहिं ते थोडा छइं सिवपुरि कहिं ॥७८॥
 तेहथी असंख नारिना जीव । ओहथी पुरुष असंख सदैव ।
 लाख न किंचन आगलि कोडि सहस न काईं लाखह जोडि ॥७९॥
 तिम नरनारि नपुंसक जाणि सिद्ध अनंत अच्छि निरवाण ।
 ए नव द्वार अनइ नवतत्त्व सद्दहणा धरज्यो भुवि सत्व ॥८०॥
 जीवादिक नवतत्त्व विचार जाणइ तेह समकित निरधार ।
 आगमवयण न मानइ जेह अनंत भव रुलस्यइ नर तेह ॥८१॥

कविता कहण कहइ कर जोडि कोइ विद्वांस म देज्यो कोडि ।
 कहि तणउ कहिवु नही मर्म महानुभावनु एहवु धर्म ॥८२॥
 आगम अरथ गुहिर गंभीर बादर बोलि कहिउं ते हीर ।
 लाभ छेहु जोइ सहु कोइ लाभ दीसइ ते बहुरइ लोइ ॥८३॥
 प्रीछया पाखइ तत्व विचार पालइ किम जिनधर्माचार ।
 जलँनिधि नंभ रस्सनइँ 'चंद्रमा । रची चउपई वरस एहमा ॥८४॥
 सुविहित खरतर गच्छनु ईश श्रीधनवर्द्धनसूरिजि सीस ।
 श्रीआणंदवर्द्धनसूरि विचार कहइं केवलि भाखिउं ते सार ॥८५॥
 कविता नाम हरिं पातकी एक मात पणि बहु जातकी ।
 इणि नार्भि अनंता हूआ एह जि जीव अनइ जूजूआ ॥८६॥
 इस्युं न जाणि इणइ संसारि । मद मुंकीनइ कहुं अवधारि ।
 आगइ कवियण साल पसालि नाम कहिउं ते देखी वालि ॥८७॥
 आणी भाव भणु चउपई । सुणिज्यो सहु एक मनां थई ।
 आगम अरथ अनंत विचार कहिउ लवलेश न लाभुं पार ॥८८॥
 सवि हुं जाण्या तत्व विचार दृढ समकित जपिवु नवकार ।
 ममता मुंकी समता धरु मुगातिवधू जिम लीलां वरु ॥८९॥

इति नवतत्व चउपई समाप्ता ॥

भद्रं भूयात् ।

संवत १६०८ वर्षे माह सुदि-१ भूमे लिखिता

श्री देवगुप्तसूरिगुरुणा ॥

कठिन शब्दोना अर्थ

गाथा	शब्द	अर्थ
८	सूखिम	सूक्ष्म-
	पढवी	पृथ्वीकाय
१०	थविर	स्थिर
१३	आभूआ	अभ्रक

१४	धुंइरि	धूमस-झाकळ
१५	झरल	ज्वाडा
	धूंड	धूमाडो
	मुरमरा	मुर्मुर-तणखा
२०	सयर	शरीर
	पर्यासि	जीवन शरीरधारी तरीके जीववानी जीवनशक्ति
२३	हुंडक संस्थान	लक्षण रहित सर्व अंगवालु शरीर
२५	ऊदारिक	औदारिक शरीर (एक प्रकारनुं शरीर)
	कार्मण	कार्मण शरीर (एक प्रकारनुं शरीर)
	ज्योति	तेजस शरीर (एक प्रकारनुं शरीर)
	सरि	शरीर
२७	सीपूना	०छीप
	पुंरा	पोरा
	इंडोल	जीवनी जात
४०	छेवट्टी संघेण	छेवट्टुं संहनन
४१	माखिक	मध
४७	कर वचा	
५१	आरइ	आरो (छ आरामांनो एक)
	भरहेरव	भरत - ऐरवत क्षेत्र
६९	लुंकि	लोके-लोकमां
७९	त्रांगि त्रागि	दोरेदोरे
८२	मवे	मपाय
८६	उच्छेधांगुल	उत्सेधांगुल (लंबाईनुं एक माप)
९३	पल्योपम	काळ्यनुं एक जैन शास्त्रीय माप
	उद्धार	पल्योपमनो एक प्रकार
१०१	साभिन्यांन	साभिज्ञान-ओळखाण
१०२	मनुक्षानुपूर्वी	मनुष्यानुपूर्वी
१०५	दाहमुं	दशमुं
१२४	यान	जाण

१२८	नीमी	धन ? नीवी - (मूल द्रव्य)
	रेवणी	घेरायेली ।
१३१	अदाप	
१३२	उरम	
१३४	जुधं	युद्धमां (युद्ध करतांये उंधे)
१३५	घांघलउ	ऊंघवुं (?)
१३६	थीणधी	थीणद्धि(निद्रानो एक प्रकार)
	खीणधी	क्षीण बुद्धि वाळे
१४४	निटोल	नक्की / अवश्य.
१४७	च्यारि चउकुं	सोल (१६) (४x४)
१६४	ओकलां	
१६५	चांब	
१६६	अलकसमलक	अलकमलकनुं (?)
	समेलु	भेगु करवुं (सुमेल)
१६८	खटकशाल	
१७१	दीकोलां	द्विपद-बेपगां (?)
	बनीआदि	बणिज आदि (?)
१७३	प्रातिकी	एक क्रियानुं नाम(आश्रयीने)
	आवटइ	अटवाय
१७८	अहिंड वस्त	शिकार (आहेड)नी वस्तु (?)
१८१	कठमर्द	कष्ट-मर्दन
१८७	अखंच	खंचकाट वगर
१९६	लंपणी	लींपण (?)
	वैभाख	तिरस्कार रूप वाणी, विभाषा
२०४	भावन	भावना (अनित्यादि)
	घरणी	पत्ती
२०५	पिआरू	परायुं
२०६	परीखा	खाई (?)
२०७	अवरति	अविरति
२१७	सुमाति	समिति (सम्यग् प्रवृत्ति)

	गुपति	गुप्ति (सम्यग् निवृत्ति)
२२६	थिवरां	स्थविर मुनि
२२७	गम	
२३०	घरष्टी	घंटी (?)
	कुदली	कोदाली (?)
२३३	उठां	दृष्टान्तरूप कहेवत - ओठां
२३९	सुभोव	स्वभाव
	उपहिरी	उपरनी
२४६	सौक्ष	सुख
	जो मठी	
२५५	रेवणी	रहेनार (?)
२५८	मइलुं	मेलुं-अशुद्ध
२६८	शव	
२७३	सपतम	सातमुं
२८७	साल पसालि	